

२६. तीसरी से चौथी में जाते हुए



बताओ तो

- बड़ा होने पर तुम क्या बनना चाहते हो ?

समय का बोध नामक प्रकरण में तुमने एक चित्र बनाया था कि अगले बीस वर्षों के बाद तुम कैसे दिखाई दोगे । वह एक काल्पनिक चित्र था क्योंकि कोई भी निश्चित रूप में यह नहीं बता सकता कि तब तुम कैसे दिखोगे परंतु बड़ा होकर तुम्हें क्या बनना है ? तुम्हें क्या कर दिखाना है ? यह तुम निर्धारित कर सकते हो परंतु उसके लिए तुम्हें खूब पढ़ना चाहिए । परिश्रम करना चाहिए ।

पढ़ने का अर्थ केवल पाठशाला में जाकर पढ़ाई करना नहीं है । हम पाठशाला में तो पढ़ते ही हैं परंतु घर पर भी अपने बड़े तथा वरिष्ठ लोगों से भी बहुत-कुछ सीखते रहते हैं । हम अपने परिसर से भी सीखते हैं । इसीलिए हम परिसर का अध्ययन करते हैं ।

परिसर के प्रति आस्था

हमारा परिसर केवल हमारा नहीं है । वह अन्य लोगों का भी अर्थात् सभी का है । परिसर द्वारा ही सभी लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है । सबसे पहले हमें अपना, स्वयं का, अपने परिवार का और विद्यालय का ध्यान रखना चाहिए । ऐसा करने पर परिसर अपने-आप सुंदर बनेगा ।

परिसर द्वारा हमें जो वस्तुएँ मिलती हैं; हमें उनका सही उपयोग करना चाहिए । तात्पर्य यह है कि हमें भोजन तथा पानी इत्यादि का अपव्यय नहीं करना चाहिए ।



थोड़ा सोचो

- यदि हम सार्वजनिक बाग के फूल तोड़ें, तो क्या होगा ?
- यदि हम घर का कूड़ा-कचरा सड़क पर फेंक दें, तो क्या होगा ?
- ऐतिहासिक वास्तुओं की दीवारों पर हमें अपना नाम क्यों नहीं उकेरना चाहिए ?
- प्लास्टिक की थैलियाँ और बोतलें हमें यहाँ-वहाँ क्यों नहीं फेंकनी चाहिए ?



बताओ तो

- तुम्हारे परिसर में तुम्हें क्या अच्छा लगता है और क्यों ?

हमारा घर

क्या तुमने देखा है कि पक्षी घोंसले कैसे बनाते हैं ? अपने बच्चों के लिए उन्हें कितना परिश्रम करना पड़ता है ? तुम्हारे घर के लोग भी तुम्हारे लिए परिश्रम करते हैं । इसलिए तुम्हें भी उनके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिए । परिवार में जो बड़े-बूढ़े हों, उनका आदर-सम्मान करना चाहिए ।

हमें अपने पिता जी, माता जी और घर के अन्य सदस्यों के काम के बोझ को कम करने के लिए अपनी ओर से प्रयास करना चाहिए। केवल अपने घर की ही नहीं अपितु सभी महिलाओं का हमें सम्मान करना चाहिए।



थोड़ा सोचो

- माता-पिता तुम्हें सबके साथ अच्छा व्यवहार करने के लिए क्यों कहते हैं ?
- माता-पिता ने खाना खाया या नहीं, क्या तुम कभी उनसे यह पूछते हो ?
- अपने घर के बड़े लोगों की तुम किस प्रकार सहायता करोगे ?
- यदि घर का कोई सदस्य बीमार पड़ जाए, तो तुम क्या करते हो ?

याद करो

‘एक-दूसरे पर निर्भर होना’, इसका क्या अर्थ है ?

परिसर के घटक

वनस्पतियाँ, प्राणी, पक्षी ये सब परिसर के घटक हैं। हम स्वयं भी परिसर का एक भाग हैं। परिसर के सभी लोगों का जीवन आनंदमय और सुचारु रूप से चलना चाहिए। सब लोगों को सुरक्षित होने का अनुभव होना चाहिए। हम क्या करते हैं, हमारा व्यवहार कैसा है; इसका परिसर पर प्रभाव पड़ता है।



करके देखो

अपनी अँगुलियों में स्याही लगाकर कागज पर उनकी छाप लो। तुम्हारी और अन्य बच्चों की अँगुलियों की छापें क्या अलग-अलग (भिन्न) दिखाई दे रही हैं ?

एक ही वृक्ष की किन्हीं दो पत्तियों को देखो। उनमें क्या अंतर दीखता है ?

परस्पर व्यवहार

एक ही वृक्ष की सभी पत्तियाँ एक समान नहीं होतीं, कुछ छोटी तो कुछ बड़ी होती हैं। कुछ पत्तियों का रंग थोड़ा-सा अलग भी होता है। सभी फूल भी एक समान नहीं होते। मनुष्य के संदर्भ में भी ऐसी ही बात है। हमारा चेहरा अन्य लोगों के चेहरों से बिल्कुल भिन्न होता है। अपनी अँगुलियों की छाप विश्व के अन्य किसी भी व्यक्ति की अँगुलियों की छाप जैसी कभी नहीं हो सकती। प्रत्येक व्यक्ति की कोई न कोई विशेषता होती है। अतः हम दूसरे लोगों को अपने से कम या हीन न मानें।

यदि कोई व्यक्ति हमारी सहायता करता है तो हमें अच्छा लगता है। हमें भी यथासंभव दूसरों की सहायता करनी चाहिए।



क्या तुम जानते हो

भारत १५ अगस्त १९४७ के दिन स्वतंत्र हुआ ।

स्वतंत्रता

प्रतिवर्ष १५ अगस्त के दिन हम अपना स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं । हमारा देश स्वतंत्र है, इसपर हमें गर्व होना चाहिए । हमें विचार करने की स्वतंत्रता है । बड़ा होकर हमें क्या पढ़ना है, हम यह निश्चित कर सकते हैं । हम अपने व्यवसाय का चयन कर सकते हैं । हमारे देश के सभी नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त हैं । प्रकृति को देखो । प्रकृति में सब कुछ नियमानुसार घटित होता है । चींटियाँ व्यवस्थित ढंग से एक कतार में ही चलती हुई दिखाई देती हैं । मधुमक्खियाँ अपने-अपने काम करती हैं।

हमें स्वतंत्र भारत का एक अच्छा नागरिक बनना चाहिए । उसके लिए हममें निष्ठा, समयशीलता, अध्यवसाय तथा अनुशासन होना चाहिए । बचपन में पढ़ने वाली अच्छी आदतें बड़े होने पर हमारे काम आती हैं ।



थोड़ा सोचो

भीड़-भाड़वाले स्थान पर कतार में खड़े होकर काम करने पर कौन-से लाभ होते हैं ?

परिसर का अध्ययन करने पर हमें बहुत-कुछ सीखने को मिलता है । चौथी कक्षा में तुम कुछ और बातें सीखने वाले हो ।





महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.
(निःशुल्क वितरण के लिए)

समग्र शिक्षा

